जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज

दिल्ली विश्वविद्यालय

द्वारा प्रस्तुत

विशिष्ट व्याख्यान माला

(हिंदी विभाग द्वारा आयोजित)

श्रीमती दिव्या माथुर

(प्रमुख प्रवासी साहित्यकार यू.के.)

प्रवासी महिला साहित्यकार और स्त्री चेतना

तिथि : 17 जनवरी 2020, समय : 11 बजे प्रात:

कक्ष : सेमिनार हॉल

दिनांक- 22 फरवरी 2021(सोमवार)
समय- 4:00-5:00 सांय

विषय-नई शिक्षा नीति और भाषा

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज के हिंदी विभाग ने हिंदी साहित्य भारती के साथ मिलकर इस कार्यक्रम का आयोजन किया जिसका विषय था 'नई शिक्षा नीति और भाषा'। इस कार्यक्रम की एकमात्र वक्ता प्रतिभाशाली डॉ. कविता भट्ट 'शैलपुत्री' रहीं जो पत्र लेखन समिति की केंद्रीय संयोजिका होने के साथ-साथ हिंदी साहित्य भारती (उत्तराखंड) की प्रदेश महामंत्री भी हैं और इसी के साथ इन्हें कई पुरस्कारों के साथ सम्मानित भी किया जा चुका है। इस कार्यक्रम की संयोजिका हिंदी विभाग की अध्यापिकाएं डॉ पूनम यादव और डॉ संध्या गर्ग रहीं।

कार्यक्रम की शुरुआत में प्रो. स्वाति पाल जो कि जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज की प्राचार्य हैं ने मातृभाषा के विषय में चर्चा करते हुए बताया कि हमें हर भाषा के प्रति आदर-सम्मान का भाव रखना चाहिए। मातृभाषा के द्वारा ही अपनेपन का भाव हमारे भीतर स्वयं आ जाता है।
डॉ कविता भट्ट ने अपने वक्तव्य की शुरुआत अभिनेता इरफान खान की फिल्म 'हिंदी मीडियम' पर चर्चा करते हुए की, कि किस प्रकार छात्र जीवन के साथ-साथ उसके बाद के जीवन में भी हमारी मातृभाषा हमारे लिए कितनी महत्वपूर्ण है। हमारी शिक्षा-दीक्षा हमारी मातृभाषा में ही होनी चाहिए और हमें अपनी मातृभाषा को विरासत में मिली सांस्कृतिक धरोहर के रूप में आगे लेकर जाना चाहिए। हमें अपने जीवन में कई भाषाएं सीखनी चाहिए परंतु हमारी मातृभाषा का असर हम पर वैसा ही रहता है जिस प्रकार हमारी जीभा पर मां के हाथ के खाने का असर रह जाता है।
चर्चा को आगे बढ़ाते हुए डॉ भट्ट ने तीन प्रत्ययों के बारे में बताया जिन्हें हमें अपने जीवन में कभी नहीं भूलना चाहिए- मां, मातृभूमि और मातृभाषा। यह तीन प्रत्यय हमारे जीवन में बेहद महत्वपूर्ण है। डॉ कविता ने हमें यह भी बताया कि 34 वर्ष बाद शिक्षा नीति में जो बदलाव लाए जा रहे हैं वह स्वागत योग्य हैं। इस नई शिक्षा नीति ने मातृभाषा को सीखने, उसमें अध्ययन करने पर विशेष बल दिया है। हिंदी, जिसे राजभाषा का दर्जा हासिल है, बस कागजों का हिस्सा ना रह जाए। हमें अपनी मातृभाषा सरल एवं सुगम लगती है तो हमें उसी में शिक्षा भी लेनी चाहिए। डॉ भट्ट ने बताया कि किस प्रकार हिंदी पूरे भारतवर्ष को जोड़ने का कार्य करती है और राष्ट्रभाषा बनने की सारी योग्यताएं इसमें हैं। इस नई शिक्षा नीति से बहुविष्य्यी सोच बढ़ेगी और यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगी। अंत में डॉ पूनम यादव जी और डॉ संध्या गर्ग जी के महत्वपूर्ण कृतज्ञ शब्दों से इस सफल कार्यक्रम का समापन हुआ। इस कार्यक्रम के ज़रिए हमें नई शिक्षा नीति के बारे में बेहद आवश्यक जानकारी मिली।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज

(हिंदी विभाग)

तथा

हिन्दी साहित्य भारती

के संयुक्त तत्वावधान में विशिष्ट व्याख्यान

विषय - नयी शिक्षा नीति और भाषा

वक्ता - डॉ. कविता भट्ट 'शैलपुत्री'

(केंद्रीय संयोजिका, पत्र लेखन समिति

प्रदेश महामंत्री हिन्दी साहित्य भारती उत्तराखंड)

समय - 4 से 5 बजे

तिथि - 22 फरवरी, 2021 सोमवार

स्थान - ज़ूम

मीटिंग आई डी - 833 4129 1529

पास कोड - 362035

संयोजक

डॉ. पूनम यादव

डॉ. संध्या गर्ग

प्राचार्या

प्रो. स्वाति पाल

दिनांक- 9 अप्रैल 2021(शुक्रवार)
विषय- साहित्यकार से अनुवाद

वक्ता- प्रो. अल्पना मिश्र (प्रख्यात कथाकार एवं लेखिका)

शुक्रवार, 9 अप्रैल को जानकी देवी मेमोरियल महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा व्याख्यान आयोजित किया गया जिसका विषय था 'साहित्यकार से अनुवाद'। इस व्याख्यान के लिए प्रख्यात कथाकार एवं लेखिका प्रो. अल्पना मिश्र हमारे साथ जुड़ी।
व्याख्यान का आरंभ प्रो. अल्पना ने अपने बचपन की स्मृतियों को ताज़ा करते हुए किया। स्कूल जाना न पसंद करने के कारण दंडस्वरूप उनका दाखिला सरकारी स्कूल में करा दिया गया। परंतु उस स्कूल से उन्होंने बहुत कुछ सीखा। उन्होंने अपना पहला लेख 'मिड-डे मील' पर लिखा। लोगों ने उन पर बहुत दबाव डालने की कोशिश की परंतु उन्होंने हार ना मानी। उन्होंने झारखंड के जल आंदोलन और आदिवासी जीवन की समस्याओं को केंद्र बिंदु बनाकर एक उपन्यास भी लिखा। आदिवासी जीवन की पीड़ा को समझा और उसे लिखकर समाज के आगे पेश किया जिससे समाज भी उनकी पीड़ा के प्रति जागृत हो। तमाम सामाजिक-पारिवारिक जिम्मेदारियां भी उन्हें रचनाएं लिखने से दूर नहीं कर पाई। 'मनुष्य और मनुष्यता' सदैव उनके लिए चिंतन का विषय रहा है। उनका मानना है साहित्य मनुष्यता से जुड़ा है केवल मनोरंजन से नहीं। किस किताब को पढ़ना है, किस विषय पर लिखना है, किस विषय पर शोध करना है, यह सब कार्य हमें सोचकर ही करनी चाहिए।
व्याख्यान के अंत में प्रो. कल्पना ने सहभागियों के कुछ प्रश्नों का सहजता से उत्तर दिया और इस सफल व्याख्यान का अंत हुआ।
"एक लेखक पर लोगों का जितना भरोसा बढ़ता है उतनी ही उसकी जिम्मेदारियां बढ़ती है।"~प्रो. अल्पना मिश्र
Report By- श्रुति श्रीवास्तव
(हिंदी विभाग)

जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

हिन्दी विभाग

द्वारा आयोजित

साहित्यकार से संवाद

प्रो.अल्पना मिश्र

प्रख्यात कथाकार एवं लेखिका

दिनांक : अप्रैल 09, 2021 (शुक्रवार)

समय : 3:00 बजे (सायं)

स्थान : जूम एप

Meeting Link : https://zoom.us/j/96793224625?pwd=em8zTjAvQlZSREdKNytlcGJrVkJIZz09

Meeting ID : 967 9322 4625

Password : HINDI

संयोजिका
डॉ. पूनम यादव
प्रभारी हिन्दी विभाग

प्राचार्या
प्रो. स्वाति पाल